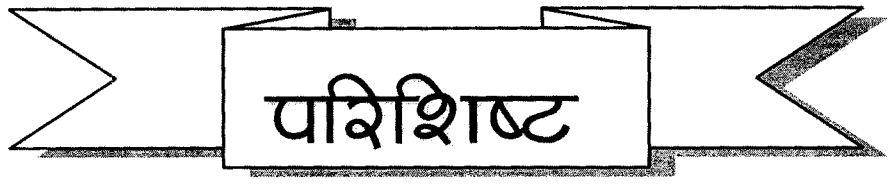
परिशिष्ट

"मोहनदास नैमिशराय के उपन्यासों में दलित चेतना"

प्रश्नावली

प्रश्न 1. आपका बचपन, शिक्षा, परिवार, नौकरी एवं मित्र परिवार के बारे में कुछ बताइए।

मेरा बचपन कुछ विषम परिस्थितियों में बीता। परिवार में भी अभाव साथ विषमता, संताप रहे तो समाज में भी। परिवार से बाहर समाज, ...न समाज से बाहर क्या? इस तरह घर और बाहर दोनों परिवेश। छटपटाहट रही, वेदना रही, तकलीफ रही। भाभियों/ मामियों/ चाचियों/ ...ताओं/ फूफियों के साथ मोहल्ले भर की स्त्रियों के बीच मैं बिन मां बच्चा था। हालांकि वे मुझे प्यार/ स्नेह देती, मुझे अपनी गोद में ...ती। इन सबसे बढ़ कर ताई मां का प्यार मिलता भरपूर तरह से। ...र भी अपनी मां का अभाव, उसके प्रति जिज्ञासा भाव मन में अवश्य रहता था। ताई ने मां बन कर वह स्थान ले लिया था। इसलिए मां के वक्षस्थल की गंध की मुझे याद ही नहीं था। फिर उसकी ...तियों से निकलते दूध की जानकारी कैसे समझ पाता। ताई मां अपनी छातियों से दूध पिलाकर उस अभाव की पूर्ति की थी।

ताई मां के साथ 'बा' (ताऊजी) रामप्रसाद जी का प्यार मिला, बड़े ... जानकी प्रसाद/ मदनगोपाल/ मोतीलाल/ ताराचन्द राय के साथ इन्दिरा/ शान्ती तथा गीता आदि बहनों का सानिध्य भी प्राप्त हुआ। मेरा ...चपन बहुत भावुकता में बीता। कारण मां चल बसी, पर पिता — ...कांत जी, जीवित थे। वे हवेली (बड़े मकान) में रहते थे। आजादी से सरकारी नौकरी में आ गये थे। 1940 में हाईस्कूल किया होगा होंगे संभवत:। मेरठ शहर में ही घर और वहीं कार्य स्थल, लेकिन ...र से दूरी पर था। लगभग सात किलोमीटर आना और सात किलो...टर ही वापस लौटना। चौदह किलोमीटर की यात्रा वे साईकल से ...ते थे। शहर में तब बसें नहीं थी, रिक्शा और कार थीं, या ...र पैदल। दलित समाज के अधिकांश लोग पैदल ही आते-जाते थे।

हमारा परिवार शिक्षित था। परिवार में पिता/ चाचा और ताऊ, के अपने-अपने दायित्व। एक कटुम्ब, पर चूल्हे अलग-अलग ...ता के परिवार में नई मां/ दो बहनें/ एक भाई, चाचा के परिवार

में पांच बेटे तथा एक बेटी और ताऊ के साथ दो बेटे, मैं ताऊ के साथ ही रहता। पक्की हवेली छोड़कर कच्चे घर में रहना न जाने क्यों अच्छा लगता। इसके पीछे ताई मां का प्यार भी हो सकता है।

मित्र बहुत थे। घर के बाहर मित्र थे ~~या~~ फिर रिश्तेदार। गढ़मरी स्कूल ~~भी~~ बस्ती में ही था। मोदीनगर के गांव ~~[illegible]~~ बेगमाबाद* में चाची (मौसी) का मायका, और अमरगढ़ (बुलन्दशहर) गांव में ताई मां का मायका था तो बागपत तहसील में सिसौला गांव ताई मां का मायका था। इस तरह बेगमाबाद/ अमरगढ़/ और सिसौला, इन तीनों गांवों में बारी-बारी से मामा/ मामियों के भरे पूरे परिवारों में मिलने जाता था मैं। वहां मुझे अपनत्व मिलता। गांव में हरियाली/ बाग-बगीचे, वे भले ही दलितों के न सही, लेकिन उनमें प्रवेश निषेध न था। इन सबके अलावा नहाने के लिए बम्बा/ नहर अलबत्ता नदी इन तीनों गांवों के आसपास न थी। नदी आकर्षण से मेरा बचपन महरूम रहा। जवानी आते-आते जीवन में समंदर आ गया जब 16 वर्ष की उम्र में पहली बार बंबई जाना हुआ।

इस तरह नदी/ नालों/ बम्बों/ नहरों/ जोहड़ों/ तालाबों से इतर जीवन में समंदर आया/ जीवन स्वयं समंदर बनता गया/

पढ़ते-पढ़ते नौकरी की। रिक्शा चलाया। दुकान पर काम किया। पर्चे बांटे/ सिनेमा के टिकट बेचे/ आखिर क्या नहीं किया। बचपन में ही रंडियों के पास जाना हुआ/ जिज्ञासा और उत्सुकता में, कभी बड़े भाई की तलाश में/ वैसे उपभोगस्वरूप कभी भी मेरठ रहते रंडियों के पास जाना नहीं हुआ।

लाख कोशिशें करने पर भी मेरठ शहर में रहते हुए (पचीस बरस तक संभवतः) किसी लड़की से संभोग सुख नहीं मिला हालांकि मेरठ में सुमन/ मंगो/ फिरजो/ रूपवती/ सौभाग्यवती आदि-आदि मित्र रहीं, जिनके साथ 16 बरस तक आंख मिचौनी का खेल खेलना होता था/ शाम ढले/ दोपहरी में गलियों में/ सीढ़ियों पर/ या फिर छतों पर हम हंसते/ खेलते/ कभी-कभी हमारे जिस्म परस्पर रगड़ खा जाते/ तब आजकल की तरह टोकाटाकी न थी या यूं कहा

* चाची से दो रिश्ते थे। वह मेरी मां की बहिन भी थी। ज्यादातर मैं उन्हें मौसी ही कहता था।

टीनेजर्स को
भाइ कि संभोग दर्शन की (जानकारी न थी।
परिवार में बड़े भाई मदन गोपाल, हां [redacted] याद आया उनसे भी बड़े थे जानकी प्रसाद। उनका विवाह हुआ रमेश नाम की लड़की से। वही मेरी भाभी बनी। उनके भाई बाद में आई.ए.एस. बने। नाम था बाबू राम। वे हापुड़ के थे। हमसे अधिक समृद्ध थे। जानकी प्रसाद में खोट था। जिस कारण रिश्ता टूट गया। उनसे छोटे मदन गोपाल, बी.ए. कर सरकारी नौकरी में आ गये। फिर मोतीलाल, उन्होंने भी बी.ए. किया और मेरठ में ही सरकारी नौकरी में आए। नारायण राय एन.टी.सी. के अंतर्गत कानपुर के म्योर कॉटन मिल में मैनेजर लगे।
तीनों भाईयों का विवाह हुआ। मोतीलाल जी की पत्नी (दिल्ली से) सिर्फ तीसरी कक्षा पास थी जबकि मदनगोपाल जी की पत्नी (दिल्ली से) आठवीं (Middle) पास और नारायण राय जी की पत्नी भी आठवीं कक्षा तक पढ़ी थी। जानकी प्रसाद जी की पत्नी चौथी कक्षा पास थी। मदन गोपाल जी की पत्नी श्रीमती मायादेवी ने विवाह के बाद हाईस्कूल तथा इण्टरमीडिएट और बाद में टीचर ट्रेनिंग की। कुछ वर्ष बाद मुरादनगर आर्डिनेंस फैक्ट्री के स्कूल में वे अध्यापिका बनी। इस तरह मेरे अपने परिवार में वे पहली महिला थीं, जिन्होंने नौकरी की। तत्पश्चात यह सिलसिला शुरु हो गया।
स्वयं मेरी पत्नी आज एम.सी.एम.सी.एल में सुपरवाइजर है, बेटी को एमए होस्टल का डिप्लोमा कराया है। अब वह नौकरी में है। परिवार का धीरे-धीरे विस्तार हुआ है। अन्य लड़कियां, बहुएं आदि भी नौकरी शुदा हैं।
पिछले वर्ष मैंने सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय के तहत डॉ. अम्बेडकर प्रतिष्ठान से मुख्य संपादक की नौकरी से इस्तीफा दिया या उन्होंने मुझे हटाया। यह मेरी सोलहवीं नौकरी थी। इसके बाद नौकरी न करने की कसम खाई और बयान पत्रिका आरंभ की।

प्रश्न 2. जीवन के प्रति आपका दृष्टिकोण स्पष्ट कीजिए।

मेरे विचार में जीवन एक ही बार मिलता है। इसलिए उस जीवन में मनुष्य को समाज के लिए कुछ विशेष करना चाहिए। ऐसा विशेष जिससे आने वाली पीढ़ी को राह मिले। उन्हें अंधेरे में भटकना न पड़े। परिवार से इतर व्यक्ति की जिम्मेदारी होती है। जिसे उसे निभाना चाहिए।

दूसरे ज्योतिबा फुले/ डॉ. अम्बेडकर/ नेल्सन मण्डेला/ डॉ. लोहिया तथा गांधी ने जो पथ निर्माण किया, उसे आगे तक ले जाना चाहिए। जाति/ धर्म तथा वर्ग से ऊपर उठ कर समस्त मानव जाति की सेवा के लिए आगे आना चाहिए। यही जीवन के प्रति मेरा दृष्टिकोण है। अपने जीवन से अधिक दूसरे के जीवन/ अस्मिता/ मान सम्मान को समझना चाहिए। भगवान बुद्ध का दर्शन "बहुजन हिताय बहुजन सुखाय" अपनाना चाहिए।

प्रश्न 3. आपके साहित्यिक जीवन का आरंभ कब हुआ।

जैसा मैंने बताया कि बचपन में मां का अभाव रहा। बहुत-सारे सवालों से जूझता था। जिज्ञासाएं उभरती थी। फिर परिवार में शिक्षित सदस्य भी थे। मैं शहर में रहता था। पुस्तकालय भी जाता था। और सबसे बड़ी बात मेरठ शहर आरंभ से ही शिक्षा तथा साहित्य में आगे रहा। दस बरस की उम्र में उपन्यास/ कहानी/ नाटक/ कविता पढ़ने की लत लगी। बड़े भाई मोतीलाल जी खूब पढ़ते थे।

लगभग 12 बरस में कविता/ कहानी/ उपन्यास लिखना आरंभ किया। स्कूल की स्मारिका के लिए, स्थानीय अखबार के लिए और मेरठ से प्रकाशित ओम सैनिक के लिए। [illegible] जाने पर (16 वर्ष की उम्र में) पहली कविता छपी।

प्रश्न 4. आपको लेखन की प्रेरणा कैसे मिली ?

लेखन के लिए परिस्थितियां कैसे निर्माण हुई, संकेत मात्र मैंने पिछले सवाल में बतलाया। प्रेरणा की जहां तक बात है वह स्वयं मेरठ की जमीन है। दूसरे दलितों पर होने वाले जुल्म और अत्याचार। तीसरे मेरठ में हर माह दलित नेताओं बी.पी. मौर्य, बाबू जगजीवन राम, मानसिंह वर्मा, रेवती शरण मौर्य, बाद में स्वागत सिंह (MLA), और बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर का भी मेरठ में भाषण हुआ था।

मैं याद दिलाना चाहता हूं कि उस समय का सर्वाधिक चर्चित अखबार 'ब्लिट्ज' मैं नियमित पढ़ता था। गांव / कस्बों के दौरे करता था। इस तरह बचपन से ही आंदोलन मेरे भीतर रच-बस गया था।

प्रश्न 5 आपके उपन्यास में दलित वर्ग अधिक चित्रित है, इसके मूल में क्या कारण है ?

सबसे पहले मैं स्वयं दलित समाज से हूं। दूसरे सवर्ण जातियों के द्वारा अभद्र व्यवहार का मैं स्वयं भुक्त भोगी हूं। तीसरे दलित आंदोलन से बचपन से मैं जुड़ा। चौथे समय-समय पर राजनीतिज्ञों / सामाजिक कार्यकर्ताओं / लेखकों / पत्रकारों से मिलना होता था। और सबसे महत्वपूर्ण बात यह कि बचपन से आज तक दलित पात्र मेरे आसपास ही है। उन पर सवर्णों का किसी न किसी रूप में [illegible] और अत्याचार होता रहा। उनके भीतर वेदना रही [illegible] भोगा। मैं खूब लिखने लगा। जितना [illegible] उतने ही अधिक दलित पात्र मुझसे [illegible]।

प्रश्न 6. 'मुक्तिपर्व' उपन्यास लिखने की प्रेरणा कैसे मिली ?

मुक्ति पर्व में आज़ादी से पूर्व और बाद की विषय सामग्री है। उपन्यास का कथानक दलित पात्रों के इर्द गिर्द घूमता है। दलितों के जीवन की विभिन्न परिस्थितियों को इसमें रेखांकित किया गया है। विशेष रूप में शिक्षा की क्या और कैसी स्थिति थी, दलितों का शिक्षा मंदिरों में प्रवेश किस रूप में था, आज़ादी के बाद भी दलितों और गैर दलितों के रिश्ते कैसे थे, क्या वास्तव में ही उन्हें आज़ादी नसीब हुई ? इस तरह के सवाल इस उपन्यास में उठाये गये हैं।

जहां तक मुक्ति पर्व लिखने के लिए प्रेरणा की बात है, दलित कथाकारों के लिए उनके आसपास की परिस्थितियां ही प्रेरक होती हैं। वे ही उनके मानस को झकझोरती हैं। बार-बार मन के दरवाजे पर दस्तक देती हैं।

प्रश्न 7. 'वीरांगना झलकारी बाई' उपन्यास लिखने की प्रेरणा कैसे मिली ?

मैं इतिहास का विद्यार्थी रहा हूं। मध्यकालीन इतिहास से मैंने एम.ए. किया है। वैसे आरंभ से ही मेरी रुचि इतिहास में ही थी। एम.ए. करने के बाद मेरे भीतर इतिहास जैसे और अधिक विस्तार होता गया। विशेष रूप में भारत में आर्यों का आगमन और द्रविड़ों से उनका युद्ध होना। उस युद्ध में द्रविड़ों का पराजित होना।

वीरांगना झलकारी बाई पर कुछ वर्ष पूर्व बहुत-से लेख तथा छोटी-छोटी पुस्तकें पढ़ीं। फिर वृन्दावनलाल वर्मा का उपन्यास 'झांसी की रानी लक्ष्मीबाई' पढ़ा। इसी बीच मुझे कई बार झांसी जाना पड़ा। कारण था, उन दिनों मैं रेल मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति का सदस्य था। मन किया कि झलकारी बाई पर उपन्यास लिखा जाए। इस तरह से यह उपन्यास लिखा गया। झलकारी बाई पर यह पहला उपन्यास है। अब तक किसी अन्य ने इस पर नहीं लिखा था।

प्रश्न 8. 'मुक्तिपर्व' उपन्यास लिखने के पिछे आपका क्या उद्देश्य था ? क्या वह साध्य हो गया ?

मुक्तिपर्व उपन्यास लिखने के पीछे उद्देश्य यही था यानि दलित समाज की विभिन्न परिस्थितियों को देखना / महसूस करना / और फिर समाज के यथार्थ को ध्यान में रखते हुए विश्लेषण करना।

दलितों को सवर्ण समाज ने आज़ादी के पहले दशक में किस तरह और किस रूप में स्वीकार किया था, क्या वे पहले की तरह उन्हें गुलाम ही समझते रहे। दूसरी बात यह कि स्वयं दलितों के अपने क्या प्रयास रहे, गुलामी के बाद मुक्ति पर्व को उन्होंने कैसे मनाया ?

जहाँ तक साध्य होने की बात है, लेखक या उपन्यासकार अपनी या समाज की वेदना, उनके सुख-दुख, जीवन, मृत्यु, उल्लास आदि चित्रों को कागजों पर लाता है। कहीं उसकी रचना से समाज प्रभावित होता है और कहीं नहीं भी।

प्रश्न 9. 'मुक्तिपर्व' का प्रमुख पात्र 'सुनीत' के निर्माण के पिछे आपका दृष्टिकोण कौन–सा है ?

मुक्तिपर्व के प्रमुख पात्र सुनीत के निर्माण की पृष्ठभूमि के बारे में अगर लिखा जाए तो वह एक आदर्श पात्र है। वह जुझारू है, मेहनती है और कर्त्तव्यपरायण होने के साथ-साथ दलित अस्मिता और पहचान के प्रति जागरूक भी है।

वह सवर्णों तथा दलितों दोनों के लिए मार्ग प्रशस्त करता है। अपनी योग्यता के बल पर शिक्षा जगत में आगे [illegible] जाता है। अपने ही सहजातियों को [illegible] प्रेरित करता है।

कुल मिलाकर कहें तो बाबा साहेब डॉ. अम्बे[illegible] एक अंश उसके भीतर मौजूद होता है। [illegible] भी है और सिखाता भी है। वह सृजन [illegible]

प्रश्न10. 'झलकारी' के ओर में आपका दृष्टिकोण क्या रहा है ?

झलकारी एक ऐतिहासिक महत्वपूर्ण पात्र है, जिसने दलित जीवन को करीब से देखा था। फिर रानी लक्ष्मीबाई का सान्निध्य प्राप्त हुआ तो उसके भीतर परिवर्तन आने लगे। साधारण परिवार में रहते हुए विशेष कुछ करने की इच्छा बलवती हुई। भोग विलास की तरफ न जाकर देश और समाज के लिए जज़्बा पैदा हुआ, और झांसी राज्य पर जब मुसीबत आई तो पति पूरन कोरी के साथ 1857 की क्रांति के युद्ध में शामिल हो गई। अपनी अस्मिता तथा पहचान के साथ झलकारी बाई ने दरबार की गतिविधियों में भी भाग लेना शुरू किया। रानी से सम्पर्क सूत्र बढ़ते गये।

निश्चित ही झलकारी दलितों का गौरव है।

प्रश्न11 अपनी रचनाओं के बारे में लिखें।

मेरी अपनी रचनाओं में कविता संग्रह से लेकर नाटक तथा उपन्यास भी हैं। हैलो कामरेड नाटक का मंचन भी कई बार हुआ। देवदासी समाज तथा उत्पीड़न पर आज बाज़ार बंद है। कालगर्ल पर "क्या मुझे खरीदोगे?" उपन्यास है, यह महिला के भीतर उठते हाहाकार को रेखांकित करता है। उसकी अस्मिता पहचान, अस्तित्व बनाए रखने की इच्छा शक्ति, महानगरीय जीवन की विषमता आदि को इसमें दर्शाया गया है।

अन्य पुस्तकों में 'बहुजन समाज पार्टी' पर 'बहुजन समाज' नाम से पुस्तक है, पत्रकारिता पर एक रेडियो अभी [illegible] मराठी तथा अंग्रेजी से अनुवाद है।

मेरी सभी रचनाएं समाज के भीतर [illegible] है। पात्रों में जद्दोजहद होती है। [illegible] होती है तथा मुक्ति की लालसा भी।

प्रश्न12. समकालीन दलित लेखन और आपके लेखन में क्या अंतर है ? आपकी मान्यता देने की कृपा करें।

आपका सवाल अगर समकालीन लेखन और आपके लेखन में क्या अंतर है? ऐसा है तो —— समकालीन लेखन यानि सवर्ण लेखन। ऐसा लेखन जो सदियों से दलितों की पीड़ा, उनके दुख-दर्दों के प्रति आंखें मूंदे था। सवर्ण साहित्य में दलित अस्मिता का अभाव होता है।

अगर सवाल स. द. लेखन और आपके लेखन .....?

समकालीन दलित लेखन ही मेरा लेखन है। भिन्न कैसे हो सकता है? जैसे अन्य दलित कथाकारों के अनुभव वैसे ही मेरे भी।

प्रश्न13 आपका अब तक किन–किन पुरस्कारों से सम्मानित किया है ?

पारखपडेके

मोहनदास नैमिशराय

प्रश्न14. आपके लेखन में दलित चेतना प्रबल रूप में प्रतिलक्षित होती है, यह किस विचारवंत / समाजसुधारक के प्रभाव का परिणाम है ?

मैं महाराष्ट्र के विभिन्न शहरों / गावों में बार-बार आता-जाता रहा। वहां हुए सम्मेलनों / जलसों / कविता-गोष्ठियों में भाग लेता रहा हूं। बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर को खूब पढ़ा है। ज्योतिबा फुले, रामास्वामी नायकर, स्वामी अछूतानंद आदि समाज सुधारकों का मुझ पर प्रभाव हुआ है। फिर मराठी भाषा सीखना आरंभ किया। दलित आंदोलन को पढ़ा। इन्हीं सबका प्रभाव यह हुआ कि मेरे लेखन में ये महापुरुष तथा समाज सुधारक कहीं न कहीं मौजूद रहे।

प्रश्न15. आज़ दलित शिक्षित बन रहे है, संगठित होकर संघर्ष कर रहे हैं, फिर भी आज दलितों पर अन्याय, अत्याचार हो रहा है, इसके बारे में अपने विचारों को रखो।

जब तक भारत में सवर्णों की मानसिकता नहीं बदलेगी तब तक दलितों पर उत्पीड़न होते रहेंगे। क्योंकि उत्पीड़न सिर्फ अशिक्षित / गरीब / या गांवों में रहने वाले दलितों पर ही नहीं शहरों / महानगरों में रहने वाले शिक्षित / नौकरीशुदा दलितों पर भी होते रहे हैं। दूसरे यह कि हर क्षेत्र में दलितों को आत्मनिर्भर बनना पड़ेगा।

मोहनदास नैमिशराय

संदर्भ ग्रंथ सूची

संदर्भ ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ

अ.नं	लेखक का नाम	ग्रंथ का नाम	प्रकाशन	वर्ष
1.	नैमिशराय मोहनदास	मुक्तिपर्व	अनुराग प्रकाशन, नई दिल्ली |	2002
2.	नैमिशराय मोहनदास	वीरांगना झलकारी बाई	राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली |	2003
		संदर्भ ग्रंथ		
1.	डॉ.अंबलगे काशिनाथ	संतों और शिवशरणों के काव्यों में सामाजिक चेतना	अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर |	1990
2.	कर्दम जयप्रकाश	छप्पर	संगीता प्रकाशन, दिल्ली |	1994
3.	डॉ.चव्हाण अर्जुन	राजेंद्र यादव के उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन	राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली |	1995
4.	गिरिराज किशोर	परिशिष्ट	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली |	1984
5.	नैमिशराय मोहनदास	अपने अपने पिंजरे	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली |	2000

6.	डॉ. मार्कण्डेय सरोज	निराला के साहित्य में युगीन समस्याएँ	विद्या प्रकाशन, कानपुर |	1989
7.	लिंबाले शरणकुमार	दलित ब्राह्मण	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली |	2004
8.	लिंबाले शरणकुमार	हिट्	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली |	2004
9.	डॉ. वरठे चंद्रकुमार	दलित साहित्य आंदोलन	रचना प्रकाशन, जयपुर |	1997
10.	वाल्मीकि ओमप्रकाश	दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र	राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली |	2001
11.	वाल्मीकि ओमप्रकाश	बस ! बहुत हो चुका (कविता संग्रह)	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली |	1997
12.	डॉ. शर्मा ज्योत्स्ना	शिवाणी का हिंदी साहित्य : सामाजिक परिप्रेक्ष्य	अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर |	1994

शब्दकोश

अ. नं.	लेखक का नाम	कोश का नाम	प्रकाशन	वर्ष
1.	संपा. अरविंद कुमार	समांतर कोश हिंदी थिसारस	नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, दिल्ली |	1997
2.	संपा. नवलजी	नालंदा विशाल शब्दसागर	आदीश बुक डिपो, नई दिल्ली |	1988
3.	संपा. रामचंद्र वर्मा	मानक हिंदी कोश - (दूसरा खंड)	हिंदी साहित्य संमेलन, प्रयाग |	1966

4.	संपा. शर्मा लीलाधर 'पर्वतीय'	भारतीय संस्कृति कोश	राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली	1996

पत्र-पत्रिकाएँ

अ. नं.	संपादक का नाम	पत्रिका का नाम	महिना	वर्ष
1.	चतुर्वेदी कुसुम	नया मानदंड	अप्रैल-जून	2003
2.	चतुर्वेदी कुसुम	नया मानदंड	अप्रैल-जून	2003
3.	नैमिशराय मोहनदास	बयान	जून	2007
4.	नैमिशराय मोहनदास	बयान	जून	2007
5.	नैमिशराय मोहनदास	बयान	जून	2007
6.	डॉ. पांड़ेय रतनकुमार	अनभै	जुलाई-सितंबर	2004
7.	डॉ. पांड़ेय रतनकुमार	अनभै	जुलाई-सितंबर	2004
8.	डॉ. पांड़ेय रतनकुमार	अनभै	अक्तूबर-दिसंबर	2004
9.	डॉ. पांड़ेय रतनकुमार	अनभै	अक्तूबर-दिसंबर	2004
10.	डॉ. पांड़ेय रतनकुमार	अनभै	अक्तूबर-दिसंबर	2004
11.	यादव विरेंद्र नारायण	हिंदी अनुशीलन	अक्तूबर-मार्च (संयुक्तांक)	2005-06
12.	वर्मा महादेवी	धर्मयुग	अक्तूबर	1987
13.	श्रोतिय प्रभाकर	नया ज्ञानोदय	जुलाई	2005

891.433
KOL
T15509